INTERNATIONAL Conference

On

Śabdārthatattvavimarśaḥ

(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

5 th & 6 th March, 2019

Proceedings

Editors :
Dr. Swarup Singha,
Dr. Uttam Biswas,
Rajib Sinha,
Asit Kr. Sau

Organised by :

Vidyasagar University Sanskrit Alumni Association

In Collaboration with

Department of Sanskrit, Vidyasagar University

International Conference
On
Śabdārthatattvavimarśaḥ
(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

5 th & 6 th March, 2019

Proceedings

Editors :

Dr. Swarup Singha, Dr. Uttam Biswas,
Rajib Sinha, Asit Kr. Sau

Organised by : Vidyasagar University
Sanskrit Alumni Association

In Collaboration with : Department of Sanskrit,
Vidyasagar University

International Conference
On
Śabdārthatattvavimarśaḥ
(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

प्रकाशनम्

5 th March, 2019

ISBN – 9789382-399452

मूल्यम् – ५००.००

विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्

VIDYASAGAR UNIVERSITY SANSKRIT ALUMNI ASSOCIATION

पश्चिममेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्गः

International Conference

On

Śabdārthatattvavimarśaḥ

(शब्दार्थतत्त्वविमर्श:)

5 th & 6 th March, 2019

Proceedings

Editors :

Dr. Swarup Singha, Dr. Uttam Biswas,
Rajib Sinha, Asit Kr. Sau

Organised by : Vidyasagar University
Sanskrit Alumni Association

In Collaboration with : Department of Sanskrit,
Vidyasagar University

International Conference

On

Śabdārthatattvavimarśaḥ

(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

प्रकाशनम्

5 th March, 2019

ISBN – 9789382-399452

मूल्यम् – ५००.००

विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्

VIDYASAGAR UNIVERSITY SANSKRIT ALUMNI ASSOCIATION

पश्चिममेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्गः

VIDYASAGAR UNIVERSITY

Professor Ranjan Chakrabarti
Vice-Chancellor

Date: 26.02.2019

MESSAGE

I am happy to learn that the Department of Sanskrit, Vidyasagar University, in collaboration with Vidyasagar University Sanskrit Alumni Association, is going to organize a Two-day International Conference on *Sabdarthatattva vimarshah* to be held on March 5 & 6, 2019 at the University campus.

I commend the endeavour of the organizers and hope that the deliberations in the Conference will really be enriching to all the participants.

I convey my best wishes for the success of the same.

(Professor Ranjan Chakrabarti)

Vidyasagar University

Department of Sanskrit
Paschin Medinipur, West Bengal, India

आनन्दस्य विषयो वर्तते यत् अस्माभिः द्विदिवसीयं आन्तर्राष्ट्रियचर्चा-सत्रम् आयोज्यते। यत्र तावत् विविधराज्यस्तरीयाः राष्ट्रियाः आन्तराष्ट्रियाः च प्राध्यापकाः गवेषकाः छात्राश्च समागताः भविष्यन्ति। यस्य विषयनिर्धारितोऽस्ति **'शब्दार्थतत्त्वविमर्शः'** इति। तत्र द्विवसद्वयं व्याप्य विविधशास्त्रेषु प्रतिपादितयोः शब्दार्थयोः स्वरूपविषये तयोः सम्बन्धादिविषये च आलोचना भविष्यति। विषयोऽयं गुरुत्वपुर्णः। कारणं शब्दं विना जगदिदमन्धे तमसि निमज्जेत्। सर्वेऽपि व्यवहाराः प्राणिनां शब्दैरेव प्रचालिताः दृश्यन्ते। तत्र मौनिव्यवहारोऽपि परश्रवणागोचरसूक्ष्मशब्दमूलक एवेति नास्ति सन्देहावकाशः कश्चित्। अतः शब्दार्थसम्पर्कितं यत् तत्त्वमस्ति तयोः विमर्शनमत्र भविष्यति। वस्तुतः शाब्दबोधकारणीभूतानां वृत्तिज्ञानादीनां च शास्त्रेषु स्वरूपविषये ऐक्यमत्यस्य अदर्शनात् मनसि कुतूहलं सर्वेषाम्। अतः चर्चासत्रस्यायोजनम्। किञ्च, अत्र पठितानां सर्वेषां शोधप्रवन्धानां मुद्रणमपि भविष्यतीति धिया सर्वेभ्यः कार्तज्ञं धन्यवादश्च विनिवेद्य समायते।

Dr.Swarup Singha
Head Of the Department
Department of Sanskrit
Vidyasagar University

सम्पादकीयसन्देश:

मानवव्यवहारस्याधारभूतमुपादानं भाषा शब्दमयीतिकृत्वा शब्दानामेव सर्वव्यवहारमूलत्वं प्रसिद्धम्। शब्दं नोच्चार्य न कोऽपि स्थातुमर्हति। मूकानामपि ध्वन्यात्मकशब्दस्य स्थिति: स्वीकरणीया। पशुपक्षिणां व्यवहृत: शव्द: ध्वन्यात्मक:। सर्व खलु जगत् शब्दाश्रितमिति।

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके य: शब्दानुगमादृते।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।।

इति भर्तृहरिबाक्यानुसारं शब्दादर्थोऽवगम्यते। किन्तु सर्वे शब्दा: सर्वमर्थं न बोधयति वृत्तिज्ञानादिति। सा वृत्ति शाब्दबोधानुकूलपदार्थज्ञानजनकज्ञानविषय: पद-पदार्थयो: सम्बन्धविशेष इति। न्यायशास्त्रानुसारं पदेन सह पदार्थस्य य: सम्बन्ध: सा शक्तिरित्यभिधीयते। शक्तिस्तु सङ्केतरूपा। शब्देनैवार्थस्य ज्ञानमिति। शब्दार्थयोर्मध्ये केवलं वाच्य-वाचको सम्बन्ध: विद्यते। व्याकरणदृष्ट्या शब्दार्थयो: तादात्म्यसम्बन्ध: विद्यते। शब्दजन्यं ज्ञानन्तु शाब्दबोध इत्युच्यते। शब्दस्वरूपविषये, शब्दार्थविषये शाब्दबोधविषये च न केवलं व्याकरणशास्त्रे दर्शन-काव्यशास्त्रादिष्वपि आलोचना सञ्जाता। शब्दार्थबोध: सम्यक् जायते चेत् संसारेऽस्मिन् सर्वं खलु व्यवहार: यथार्थं भविष्यतीति मत्वा अस्माभि: विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागस्य प्राक्तनविद्यार्थिभि: **शब्दार्थतत्त्वविमर्श** इति विषयमाधारीकृत्य द्विदिवसीयमेकमान्तर्जातिकसम्मेलनम् आयोजयिष्यते। सम्मेलनस्यावयवरूपेण भारतीयविद्यासम्बन्धीयानुसन्धानात्मकप्रबन्धसंकलनमेकं प्रकाश्यते इति विचिन्त्य मे मनसि महदानन्दं जनयतीति।

अनेन अनुसन्धानात्मकप्रबन्धसंकलनेन शब्दार्थविषये विमर्शं कुर्वतां शोधच्छात्राणां भविष्यति कश्चिदुपकार इति मे विश्वास:। सारासारविवेकिन: विद्वांस: प्रबन्धसंकलनमवलोक्य प्रसीदन्तु इति प्रार्थये। अत्रापि पुरुषमात्रसाधारणभ्रमप्रमादादिदोषा: भवेयुरेव तेषाञ्च दोषाणां निवेदनेन मामनुगृह्णन्त्विति विद्वज्जनान् सम्प्रार्थये।

संस्कृतानुचर:

राजीवसिन्हा

सम्पादक:,विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य

संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्,

मेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्ग:

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषया:	लेखका:	पृष्ठाङ्का:
1	शाब्दिकानां शब्दस्वरुपविमर्श:	जयदेवदिन्दा	1
2	स्फोटतत्त्वमीमांसा	अभिषेकमुखार्ज्जी	8
3	शाब्दबोध:	डा. वामदेवसेनापति:	12
4	संक्षेपशारीरकानुसारेण वेदान्तवाक्यस्य अखण्डार्थप्रतिपादनपद्धति:	डा. देवाञ्जनदास:	15
5	व्याकरणशास्त्रे शब्दार्थसम्बन्ध:	बावलुप्रामानिक:	17
6	साहित्यदर्पणदिशा अभिधालक्षणाव्यञ्जनाविमर्श:	भोलेश्वरप्रधान:	22
7	ध्वनिचिन्तने शब्दार्थतत्त्वविमर्श:	सोमनाथ-सेनापति:	24
8	''न्यायवैशेषिकनये शब्दतत्त्वविमर्श:''	देवार्पिता व्यानार्जी	27
9	साहित्यशास्त्रे शब्दार्थतत्त्वम्	दीपङ्करमिश्रेण	31
10	सांख्ये शब्दस्वरूपम्	गोविन्ददास:	36
11	काव्यलक्षणोदित: शब्दार्थतत्त्वविमर्श:	श्रीमान् गोपाल आचार्य:	39
12	वाक्यस्फोटस्य शाब्दवोधहेतुत्वनिरास:	कृष्णगोपालपात्र:	43
13	ओम्-इति शब्दतत्त्वम् ; तदेव एव जगत्कारणम्	वाणेश्वरजाना	49
14	अलंकारचिन्तने सूर्याग्निसूक्ते	चन्दन-मण्डलेन	51
15	मीमांसानये शब्दतत्त्वविमर्श:	देवाशीषमिश्रेण	54
16	पदार्थबोधघटित-शास्त्रीयसिद्धान्त:	डा. खोकनभट्टाचार्य:	57
17	अर्थनिष्पत्तौ वैदिकस्वर-काव्यशास्त्रशक्त्यो: सादृश्यपर्यालोचनम्	मौमिता खाण्डया	61
18	आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्श:	नाडुगोपालवेरा	65
19	भिक्षुशब्दानुशासनस्य कतिपयानां सूत्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्	निर्मलकुमारराहा	69
20	साहित्यशास्त्रे अभिधा-लक्षणा-व्याञ्जनातत्त्वविमर्श:	निताइपाल:	72
21	मालविकाग्निमित्रमिति दृश्यकाव्ये प्रयुक्त: वैदिकशब्दविमर्श:	पापनचन्द:	74
22	शब्दशक्तिविचार:	पापियावेरा	76
23	वर्णसमात्रया:-एकं विश्लेषणम्	परमेश:भट्टाचार्य्य:	80
24	वौद्धार्थनिरूपणम्: एकमध्ययनम्	पारमितාराय:	88
25	भिक्षुशब्दानुशासने कर्मतत्त्वविमर्श:	डॉ.प्रशान्तकुमारमहला	92
26	रुय्यककृते अलंकारसर्वस्वे व्याञ्जनाविमर्श:	डा. प्रितमरोज:	97
27	अलङ्कारस्य सप्तमवेदाङ्गत्वम्	राइचरणकामल:	102
28	शब्दानुशासनशास्त्रदिशा शब्दार्थत्त्वनिरूपणम्	डा. रुवेलपाल:	106
29	वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये... इत्याद्वयश्लोकप्रतिपादितशब्दार्थतत्त्वस्य विमर्श:	सनातन-दास:	112
30	श्रीप्रफुल्लकुमारमिश्रकृतिसम्भारस्य 'तथापि सत्यस्य मुखम् ' पद्यकाव्ये शब्दार्थतत्त्वविमर्श:	श्री श्यामल गोस्वामी	116
31	नामार्थतत्त्वमीमांसा	श्रीमन्तभद्र:	120
32	शाब्दबोधे तात्पर्यतात्पर्यनिर्णय:	शौमित्राचार्य:	127
33	शाब्दवोधमीमांसा	सौरभमण्डल:	134
34	चित्सुखदर्शनदिशा शब्दार्थविमर्श:	सौभिकविश्बास:	138
35	शब्दस्य लक्षणाशक्तिविमर्श:	शुभमयपाहाड़ी	140
36	शब्दस्यार्थप्रकाशे शक्ते: भूमिका	उत्तमकुमारवेरा	143

		मनोजवर्मन:	146
37	पाणिनीयव्याकरणे माहेश्वरसूत्रविमर्श:	सुरेनकुमारमहापात्र:	148
38	शब्द: ब्रह्मेति विमर्श:	डा. हीरालालदासश्च	151
39	साहित्यशास्त्रे लक्षणाशक्ति: शाब्दबोधश्च	पङ्कजकुमारमाहाना	
		मदनपात्र:	154
40	पूर्वमीमांसायां उत्तरमीमांसायाञ्च धर्मशब्दस्य अर्थविवेचनम्	मधुसूदन दास:	157
41	दर्शनशास्त्रे शब्दार्थतत्त्वविमर्श:	मौमितामान्ना:	161
42	व्यञ्जनाया: प्रभाव:	मौसुमीपाल:	165
43	साहित्यशास्त्रे काकोरभिव्यञ्जकत्वम्	रञ्जनमण्डल:	169
44	न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीसम्मतलक्षणाविमर्श:	रासमणि घोडइ	172
45	शाब्दिकमते शब्दस्वरुपम्	सन्दीपचटर्जी	175
46	व्याकरणशास्त्रे शब्दाद्वैतवाद:	सञ्जयमण्डल:	178
47	काव्यशास्त्रिणां मतेऽभिधाशक्ते: स्वरूपविवेचनम्	शारदापण्डा	183
48	प्रमिताधिरणानुसारेण शब्दब्रह्म	सोमामाइति:	186
49	उत्तररामचरितनाटके अर्थाव्यञ्जनाविमर्ष:	टुम्पा जाना	189
50	व्याकरणमीमांसाशास्त्रयो: शब्दार्थतत्त्वसमन्वयम्	अनन्यासरकार	192
51	साहित्यशास्त्रे वृत्तिविमर्श:	गीताञ्जलित्रिपाठी	200
52	स्फोटतत्वविचार:	प्रीतममण्डल:	203
53	कुन्तकनये शब्दार्थतत्त्वविचार:-एकमध्ययनम्	शशाङ्कशेखरपात्र:	209
54	अलंकारशास्त्रे ध्वनितत्त्वविमर्श:	सुकदेवसाउ:	212
55	वैशेषिकव्याकरणयोर्मते शब्दतत्त्वसमीक्षणम्	उदयशङ्करखाटुया	215
56	अपभ्रंशेषुशाब्दबोधसमीक्षा	पुष्पेन्दुदाश:	222
57	वेदानुगामीन्यायनये शाब्दबोधकारणम्	प्रसेञ्जितसूत्रधर:	225
58	शब्दार्थतत्त्वे वक्रोक्ति:	आरतिमाइति	234
59	प्रमाणशब्दार्थनिरुपणम्		236
60	शब्द: विभु: नित्यश्च		
61	নাট্যশাস্ত্রবিবেচনে শব্দার্থ বিমর্শ	বামাপদ বাউরী	238
62	অভিধালক্ষণাব্যঞ্জনাবিমর্শ	সোমনাথ সাহা	241
63	মহাভাষ্যকার পতঞ্জলি মতে শব্দার্থবোধ	অদিতি সামন্ত	247
64	বৈদিক সাহিত্য ও শব্দার্থবিজ্ঞান	অরুপ সরকার	250
65	আনন্দবর্ধনের দৃষ্টিতে ব্যাচার্থ –প্রতীয়মানার্থবিচার	অভিজিৎ পণ্ডিত	257
66	ন্যায়-বৈশেষিক মতে শব্দ বিমর্শ	বৈশাখী মাকাল	260
67	ন্যায়বৈশেষিক শাস্ত্র ও মীমাংসা শাস্ত্রে শব্দার্থতত্ত্বের তুলনামূলক আলোচনা	বৈশাখী কান্ডার	268
68	গুণশব্দার্থতত্ত্ববিবেচন		
69	সাহিত্যে শব্দশক্তি : অভিধা, লক্ষণা,ব্যঞ্জনাবিমর্ষ	কালীপদ মন্ডল	271
70	বেদব্যাকরণয়োঃ শব্দার্থতত্ত্ববিমর্ষ	কনকপ্রভা সরকার	274
71	ন্যায় বৈশেষিক মতে শব্দার্থ তত্ত্ব	মন্টু চৌবে	276
72	ন্যায় বৈশেষিক দর্শনে বাক্যার্থ জ্ঞানের হেতু - একটি সমীক্ষা	মান্তু মিতর	278
73	মীমাংসামতে শাব্দবোধ ; ভাবনা ও লিঙ্-এর বিশেষ সন্দর্ভ	মৌমিতা হালদার	280
74	কাব্যপ্রকাশের-আলোকে-ব্যঞ্জনা	রাজেশ প্রামাণিক	281
75	ন্যায়-বৈশেষিকদর্শনসম্মত শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	সঞ্চিতা পাত্র	289
		শুভা সরকার	291

76	আচার্য ভর্তৃহরির মতে শব্দব্রহ্ম	শিল্পা বিশাই	293
77	বাক্যপদীয়ে শব্দার্থতত্ত্বচিন্তন	সুবীর দলুই	296
78	কাব্যসাহিত্যে শব্দার্থবিবেচনা	সুব্রত কুমার মান্না	300
79	শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	সুপর্ণা মণ্ডল	303
80	কাব্যশাস্ত্রে অভিধা লক্ষণা ব্যাঞ্জনা	সুস্মিতা পোড়িয়া	306
81	কাব্যপ্রকাশের আলোকে লক্ষণা	তরুণ কুমার ভূঞ্যা	309
82	কিরাতার্জুনীয়ম্ মহাকাব্যে প্রথমসর্গে প্রযুক্ত শব্দসমূহের ঘন্টাপথটীকানুসারে ব্যাকরণাত্মক বিশ্লেষণ	চন্দন মণ্ডল	312
83	মীমাংসাদর্শনে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	নমিতা সাহা	317
84	উপনিষদ ও শব্দব্রহ্ম	প্রসেনজিৎ মণ্ডল	323
85	গীতাসু শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	রাজীব ভট্টাচার্য	325
86	সাহিত্য শাস্ত্রে শব্দার্থ তত্ত্ব বিমর্ষ	তুষার পাত্র	326
87	কাব্যপ্রকাশানুসারে অভিধা, লক্ষণা, ব্যঞ্জনা - পর্যালোচনা	রানু কোলে	330
88	শব্দের আলোকে ব্রহ্ম	সুকন্যা সরকার	333
89	বৈয়াকরণদের স্ফোটতত্ত্ব মীমাংসা	অনিমা সাহু	336
90	শাব্দবোধের কারণসমূহ সমীক্ষা	দীনবন্ধু মণ্ডল	341
91	परमलघुमञ्जुषायाम् शब्दशक्तिनिरुपणम्	प्रलय: शङ्कर: अधिकारि	344
92	श्रीशिवरामेन्द्रसरस्वतीविरचितसिद्धान्तरत्नप्रकाशस्थितप्रातिपदिकार्थविचारविमर्शः	सुकान्तमान्ना	347
93	Vamana's notion of *lakṣaṇa* in the light of his definition of *vakrokti*	Dr. Pratim Bhattacharya	352
94	The Logico-Linguistic Analysis Of Sabda Pramana : With Special Reference To Advaita Vedanta	*Dr.Rasmita Satapathy,*	356
95	The word '*Tātparya*' and its meaning in Indian Rhetoric Grammar	*Dr. Tarak Jana,*	360
96	Exploring The Meaning Of The Terms Used In The Nyāyasutra	Junashmita Bhuyan	363
97	लिङर्थविमर्श:	स्नेहालदेशपाण्डे:	368
98	অভিধা-লক্ষণা-ব্যঞ্জনাবিমর্শঃ	সুপ্রিয়া বেরা	378
99	शाब्दबोधे केचन विषया: न ते शब्दप्रतिपाद्या:	कृष्णपददास-अधिकारि	383

आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः

वेदस्य प्रामाण्योपरि भारतीयदर्शनस्य भेदद्वयं प्राप्यते- आस्तिकं नास्तिकं च। वेदस्य प्रामाण्यं येन स्वीक्रियते सः आस्तिकः। वेदस्य प्रामाण्यं येन न स्वीक्रियते सः नास्तिकः। मनुना उक्तम्-

"योऽवमन्येते ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विजः। // स साधुभिः वहिष्कार्यो नास्तिको वेदनिन्दकः॥"[१]

स्मृ- धातोः क्तिन्- प्रत्ययेन 'स्मृति' इति शब्दः जायते। अस्माकं प्रात्यहिकजीवने स्मृतेः गुरुत्वमस्ति। परन्तु स्मृतेः स्वरूपविषये दार्शनिकसम्प्रदायेषु मतभेदाः परिलक्ष्यन्ते। स्मृतिः का? स्मृतिः यथार्थज्ञानं भवितुं शक्नोति न वा इत्यस्मिन् विषये मतानैक्यं परिलक्ष्यते दर्शनशास्त्रेषु।

पाश्चात्यमनोविद्यायां स्मृतेः लक्षणं परिलक्ष्यते। Woodwarth इति महाभागेन स्मृतेः वैशिष्ट्यत्रयम् उल्लिखितम्। वैशिष्ट्यत्रयं यथा – L, I, R.[२] 'L'- इति वर्णेन 'Learning' अर्थात् शिक्षणमेव बोध्यते। यस्मिन् विषये ज्ञानम् उत्पद्यते तस्य स्मृतिः भवति। 'I'-इति बर्णेन 'Interval' अर्थात् समयव्यवधानमेव बोध्यते। अतः स्मृते उत्पादने कालस्य व्यवधानम् आवश्यकम्। कालस्य व्यवधाने अर्जितज्ञानं संरक्षितं भवति। 'R'-इति वर्णेन Reproduction अर्थात् पुनरुद्रेकम् एव बोध्यते। संरक्षितविषयाणां यथासमये उद्दीपकसहायेन प्रयोग एव पुनरुद्रेकम्। अतः स्मृतेः पक्षत्रयमस्ति- ज्ञानग्रहणं संरक्षणं पुनरुद्रेकं च। भारतीयास्तिकदर्शनेषु स्मृतिभावना अत्र प्रकाशिता भवति।

न्यायदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः

भारतीयदर्शनस्य भिन्नशखायां स्मृतेः स्वरूपविषये भिन्नमतं परिलक्ष्यते। न्यायदर्शने स्मृतेः स्वरूपं गुरुत्वसहायेन वर्णितम्। **"स्मरणन्तु आत्मनो ज्ञ स्वाभाव्यात्"**[३] -अस्मिन् सूत्रे गौतमेन उक्तं ज्ञानम् आत्मनः गुणः। अतः स्मरणमपि आत्मनः गुणः इति विषयः गौतमेन प्रतिपादितः। स्मरणम् आत्मगुणः इति कथनेन आत्मनः अनित्यत्त्वमपि निराकरोति गौतमः। बौद्धमतानुसारेण बुद्धिसन्तानमेव स्मृतेः कारणम् इति विषयः एव नैयायिकेन निराक्रियते। **'आत्मन एव स्मरणं ,न बुद्धिसन्तानमात्रस्य इति'**।[४] कथं स्मृतिः नित्यात्मनि उत्पद्यते? महर्षिणा उक्तम् –**'ज्ञ-स्वभाव्यात्'**। अर्थात् ज्ञानमेव आत्मनः स्वभावः। नव्यन्यायनये संस्कारमेव स्मृतेः कारणम्। परन्तु गौतमेन उक्तं प्रणिधानतः अधर्मपर्यन्तमेव सप्तविंशतिः विषयाः स्मृतेः कारणम्। न्यायसूत्रे उक्तम्-**"प्रणिधान-निवन्ध-अभ्यास-लिङ्ग-लक्षण-सादृश्य-परिग्रह-आश्रय-आश्रित-सम्वन्ध-आनन्तर्य्य-वियोग-एककार्य्य-विरोध-अतिशय-प्रप्ति- व्यवधान-सुख-दुःख-इच्छा-द्वेष-भय-अर्थित्व-क्रिया-राग-धर्म-अधर्म निमित्तेभ्यः"**[५]

महर्षिमते ज्ञानम् आत्मनः गुणः। अहम् अजानाम्, अहं जानामि,अहं ज्ञास्यामि च इत्यादिरूपेण ज्ञानम् आत्मनि उत्पद्यते। अर्थात् ज्ञानं भूतकाले वर्तमानकाले भविष्यतकाले च आत्मनि उत्पद्यते। स्मरणं त्रिकालव्यापी न भवति। केवलम् अतीतकालस्य ज्ञातविषयस्य स्मृतिः भवति। नव्यन्यायमते स्मृतिः संस्कारस्याधीना। **"संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः'**।[६] अर्थात् केवलं भावनाख्या-संस्कारतः सृष्टिर्ज्ञानमेव स्मृतिः। वेगः स्थितिस्थापकः च संस्कारस्य अपरं विभागद्वयम्। परन्तु स्मृतेः जनकः भावनाख्या- संस्कारः। संस्कारोऽयं जीवात्मनि वर्तते। लक्षणस्थितेन "संस्कार" इति शब्देन भावनाख्या- संस्कारः एव बोध्यते। लक्षणस्थितेन "ज्ञानं" इति पदेन संस्कारध्वंसे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति। संस्कारध्वंसं प्रति संस्कारमेव कारणं भवति। परन्तु संस्कारध्वंसः ज्ञानं न। "ज्ञानं" इति पदभिन्नलक्षणं संस्कारध्वंसे प्रयुक्तं भविष्यति। अतः "ज्ञानं" इति पदेन संस्कारध्वंसे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति। "संस्कारजन्यम् " इति पदेन घटादिप्रत्यक्षे अतिव्याप्तिः निवारिता भवति।

प्रत्यक्षज्ञानं इन्द्रियेण सह विषयस्य सन्निकर्षेण उत्पद्यते संस्कारतः न। अतः घटादिप्रत्यक्षे अतिव्याप्तिवारणाय "संस्कारजन्यम्" इति पदं सन्निवेशितं भवति। लक्षणे "मात्र" इति पदेन प्रत्यभिज्ञायामतिव्याप्तिः निवारिता भवति। प्रत्यभिज्ञा स्मरणजन्यं भवति। परन्तु केवलं स्मरणजन्यं न भवति। तत्र इन्द्रियेण सह विषयस्य सन्निकर्षः अपि तिष्ठति। स्मृतिः केवलं संस्कारतः सृष्टिर्भवति। अतः "मात्र" पदेन प्रत्यभिज्ञायामतिव्याप्तिः निवारिता भवति।

स्मृतेः उत्पत्तिः केवलं संस्कारतः न भवति। यतः स्मृतिःभावपदार्थः। संस्कारम् अत्र निमित्तकारणम्। केवलं निमित्तकारणतः भाववस्तोः सृष्टिः न भवति। स्मृतिः एकं ज्ञानम्। अतः स्मृतेः उत्पत्तिः आत्मनि भवति। आत्मा अत्र समवायीकारणम्। आत्ममनसंयोगः अत्र असमवायीकारणम्। कालादिविषयः अत्र निमित्तकारणम्। निमित्तकारणेषु अन्यतमः संस्कारः। अतः केवलं स्मृतेः उत्पत्तिः संस्कारतः न भवति। नीलकण्ठमहाशयेन उक्तम् स्मृतिलक्षणे "केवलं संस्कारं"इति पदद्वयं यदि उक्तम् तर्हि अत्र असम्भवप्रसङ्गागच्छति। अतः "संस्कारमात्रजन्यम्" इति पदेन प्रत्यभिज्ञायाः निषेधः भवति। प्रत्यभिज्ञायां विषयस्य प्रत्यक्षं भवति। परन्तु स्मृतौ विषयस्य प्रत्यक्षं न भवति। न्यायवोधिनीकारेण उक्तम्-**"वहिरिन्द्रियाजन्यत्वविशिष्ट संस्कारजन्यत्वविशिष्टज्ञानत्वं स्मृतेः लक्षणम्"**।[७]

वैशेषिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- न्यायदर्शनस्य समानतन्त्ररूपेण ख्यातो वैशेषिकदर्शने स्मृतेः आलोचना दृश्यते। कणादः वैशेषिकसूत्रस्य रचयिता। अस्य भाष्यकारःप्रशस्तपादः। बुद्धिप्रकरणे भाष्यकारेण बुद्धिः उपलब्धिः प्रत्ययःमतिः चेतना च इत्यादयः शब्दाः बुद्धेः प्रतिशब्दरूपेण व्यवह्रियन्ते। अमरकोषे उक्तम्-

"बुद्धिर्मनीषा धिषना धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः। // प्रेक्षोपलब्धिश्चित् संवित् प्रतिपज् ज्ञप्तिचेतनाः"।

प्रशस्तपादाचार्यानुसारेण बुद्धिः द्विविधा – विद्या अविद्या च। विद्यापि चतुर्विधा- प्रत्यक्षम् लैङ्गिकः स्मृतिः आर्षश्च। प्रशस्तपादाचार्यानुसारेण स्मृतेः लक्षणम्-**"लिङ्गदर्शनेच्छानुस्मरणाद्यपेक्षादात्ममनसोसंयोगविशेषात् पट्वभ्यासादरप्रत्ययजनिताच्च संस्कारात् दृष्टश्रुतानुभुतेष्वर्थेषु शेषानुव्यवसायेच्छानुस्मरणद्वेष-हेतुरतीतविषया स्मृतिः।"**[८] अर्थात् लिङ्गदर्शनेच्छानुस्मरणाद्यपेक्षं कृत्वा आत्ममनसोः संयोगात् पटुज्ञादिसंस्कारात् प्रत्यक्षशब्दानुमितविषयेषु शेषानुव्यवसायादिकारणेण अतीतविषयस्य ज्ञानमेव स्मृतिः। लिङ्गदर्शनेच्छा स्मृतेः निमित्तकारणम्। लिङ्गदर्शनम् अर्थात् हेतोः दर्शनं स्मृतेः कारणम्। पूर्वानुमितौ व्यवहृतः हेतुः यदि भिन्नस्थाने परिलक्षितः भवति तर्हि तेन लिङ्गदर्शनेन सृष्टसंस्कारात् पूर्वानुमितविषयस्य स्मृतिः भवति। इच्छापि स्मृतेः कारणम्। पूर्वानुभूतविषयस्य स्मरणेच्छया सृष्टसंस्कारात् पूर्वानुभूतविषयस्य स्मृतिः भवति। अनुस्मरणशब्देन पूर्वानुभूतविषयस्य पुनः स्मरणं बोध्यते। अनुस्मरणेन स्मृतिः भवति। 'लिङ्गदर्शनेच्छानुस्मरणाद्यपेक्षाद्'- अत्र 'आदि' इति पदेन गौतोमोक्तं 'प्रणिधानतः अधर्मादिपर्यन्तं सप्तविंशतिः स्मृतेः निमित्तकारणम् बोध्यते। आत्ममनःसंयोगः स्मृतेः असमवायीकारणम्। स्मृतेः समवायीकारणम् आत्मा। लक्षणस्थितेन 'संस्कारात्' इति पदेन लिङ्गदर्शनादिव्यापाररूपेण सृष्टः संस्कार एव बोध्यते। संस्कारात् सृष्टः स्मृतेः निमित्तकारणं संस्कारः। परन्तु केवलं संस्कारात् स्मृतिः न जायते। 'पट्वभ्यासादरप्रत्ययजनिताच्च' अर्थात् पटु- अभ्यासादरयुक्तज्ञानं च स्मृतिजनकस्य संस्कारस्य कारणम्। पटुशब्देन स्पष्टः बोध्यते। अभ्यासशब्देन आवृत्तिः बोध्यते। ज्ञानात् जातसंस्कारात् केवलं स्मृतिः न भवति। विषयस्य पुनः पुनः आवृत्तिः आवश्यकम्। 'दृष्टश्रुतानुभुतेष्वर्थेषु' इति उक्तिना स्मृतेः विषयः बोध्यते। अत्र दृष्टशब्देन प्रत्यक्षं बोध्यते। श्रुतशब्देन शाब्दबोधः बोध्यते। अनुभुतशब्देन अनुमानं बोध्यते। सर्वविषये स्मृतिः सृष्टिर्भवति। स्मृतेः फलरूपेण प्रशस्तपादेन उक्तं- 'शेषानुव्यवसायेच्छानुस्मरणद्वेष-हेतु' अर्थात् शेषशब्देन अवशिष्टः बोध्यते। अनुव्यवसायशब्देन पश्चात्यज्ञानं बोध्यते। अनुस्मरणशब्देन पश्चात् स्मरणं बोध्यते। अन्तिमे प्रशस्तपादेन उक्तं-'अतीतविषया' अर्थात् स्मृतिः अतीतकालस्य एव भवति न तु वर्तमानकालस्य भविष्यत्कालस्य वा।अतः अत्र स्मृतिः यथार्थज्ञानम्।

सांख्यदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः – सांख्यदर्शनं प्रमेयशास्त्रं न तु प्रमाणशास्त्रं न्यायदर्शनवत्। सांख्यदर्शने प्रधानरूपेण तत्त्वद्वयम् अस्ति- प्रकृतिः पुरुषः च। तत्त्वद्वयोः प्रतिष्ठानं सांख्यदर्शनस्य मुख्योद्देशः। परन्तु प्रमाणं विना प्रमेयसिद्धिः न भवति। **"त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि।"**[९] सांख्यमते प्रमाणं त्रिविधम्-प्रत्यक्षम् अनुमानं शब्दश्च। प्रमायाः असाधारणकारणं प्रमाणम्। तत्त्वकौमुदीकारेण उक्तं-"प्रमीयते अनेन इति निर्वचनात् प्रमां प्रति करणत्वं गम्यते।" अतः प्रमाणनिर्वचनम् आवश्यकम्। सांख्ये प्रमाणलक्षणमुक्तं- "असन्दिग्धाविपरीतानधिगताविषया चित्तवृत्तिः"।[१०] अर्थात् असन्दिग्धा अविपरीता अनधिगता च चित्तवृत्तिः प्रमाणम्। संशयज्ञाने अतिव्याप्तिनिवारणार्थं 'असन्दिग्धा'इति पदं प्रदीयते। एकाधिकरणे विरुद्धधर्मद्वयज्ञानमेव संशयः। संशये विरुद्धज्ञानं भवति परन्तु प्रमाणेन निश्चितज्ञानं भवति। बाधितविषयकभ्रमज्ञाने अतिव्याप्तिनिवारणार्थं 'अविपरीता' इति विशेषणं प्रदीयते। स्मृतिज्ञाने अतिव्याप्तिनिवारणार्थम् 'अनधिगता' इति विशेषणम् अत्र प्रदीयते। स्मृतौ पूर्वानुभूतविषयः अस्ति। अतः स्मृतिः अधिगतविषयकज्ञानम्। प्रमाणेन नुतनज्ञानं भवति। अत्र पूर्वानुभूतविषयः नास्ति। तत्त्वकौमुदीकारेण उक्तं **"एतेन संशयविपर्ययस्मृतिसाधनेपु अप्रसङ्गः"।**

अतः असन्दिग्धा अनधिगता अविपरीता चित्तवृत्तिः एव प्रमाणम्। सांख्यदर्शने स्मृतेः भिन्नरूपेण लक्षणं नास्ति। न्याय-वैशेपिकदर्शनयोः व्याक्ता स्मृतिलक्षणं सांख्यदर्शने स्वीकृतं भवति। यतः अप्रतिसिद्धं परमतं अनुमतम् भवति।

योगदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- महर्षिणा पतञ्जलिना योगसूत्रे 'योगः' इति शब्दस्य अर्थः क्रियते चित्तवृत्तिनिरोधः। **"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः"**।[११] व्यासदेवेन व्यासभाष्ये उक्तम्- **'योगः समाधिः'**। अर्थात् योगशब्दस्य अर्थः समाधिः। योगदर्शने चित्तवृत्तिः पञ्चविधा-प्रमाणम् विपर्ययः विकल्पः निद्रा स्मृतिश्च। पतञ्जलिना उक्तम्-**' प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः'**। पञ्चचित्तवृत्तिनिरोधः योगः।स्मृतिविपये पतञ्जलिना उक्तम्-**'अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः'**।[१२] 'असम्प्रमोषः' शब्दस्य अर्थः प्रकाशम्। प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविपयः अनुकूलप्रसङ्गे पुनरुद्रेकः स्मृतिः। पितृधने यथा पुत्रस्य अधिकारः वर्तते तथैव प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविषये स्मृतेः अधिकारः वर्त्तते। यथा पितृधनग्रहणेन पुत्रस्य चौर्यापराधः न भवति तथा प्रमाणादिसहायेन ज्ञातविषयः ग्रहणेन स्मृतेः चौर्यापराधः न भवति। अनुभवस्यातिरिक्तविपयः स्मृत्या न गृह्यते। अनेन ज्ञायते स्मृतिः अनुभूतविषयस्य भवति। अनुभवस्य विषयः सम्पूर्णरूपेण अज्ञातः भवति। परन्तु स्मृतेः विपयः ज्ञातः भवति। प्रत्यभिज्ञायाः विषयः कश्चित् ज्ञातः कश्चित् अज्ञातः भवति। अतः प्रत्यभिज्ञा स्मृतिः न। प्रत्यभिज्ञा स्मृत्यनुभवसहायेन जायते।

व्यासभाष्ये उक्तम्-**'किम् प्रत्ययस्य चित्तं स्मरत्याहोस्विद्विषयस्येति ?'**[१३] अर्थात् चित्तं किं स्मरति? ज्ञानं विषयः वा। उक्तं चित्तम् उभयं स्मरति। अर्थात् चित्तं विपयं ज्ञानं च स्मरति। ज्ञानं विषयाधीनं परन्तु चित्ते ग्राह्यज्ञानं विषयः च स्मृतौ उभयमेव भाषितः भवति। फलेन चित्ते स्वानुरूपं विपयाकारसंस्कारं ज्ञानाकारसंस्कारं च जायते। उद्बोधकसहायेन संस्कारतः विषयाकाररूपेण

ज्ञानाकाररूपेण च स्मृतिः जायते। योगमते ज्ञानस्य अंशद्वयम् अस्ति विषयांशः ज्ञानांशः च। 'अयं घटः'- इत्यत्र ज्ञानस्थले घटः (वहिरांशः) विषयांशः घटप्रकाशं स्फुरणं वा(येन घटः ज्ञायते)ज्ञानांशः। ज्ञानशब्देन प्रकाशः बोध्यते। अत्र उभययोः स्वरूपतः भेदो नास्ति। विषयभेदेन ज्ञानभेदः भवति। ज्ञानांशः सदा प्रत्यक्षं भवति। परन्तु विषयांशः प्रत्यक्षं परोक्षं च भवति। अनुभवतः संस्कारं जायते। संस्कारतः स्मृतिः जायते।अतः स्मृतेः विषयः ज्ञानं घटादिविषयः च भवति। अतः अनुभूतविषयस्य संस्कारतः चित्ते पुनरुद्रेकं हि स्मृतिः।

योगभाष्ये उक्तं स्मृतिः द्विविधा- भावितस्मर्तव्या अभावितस्मर्तव्या च।स्वप्रकालिकस्मृतिः भावितस्मर्तव्या अर्थात् कल्पिता। जाग्रतदशायां स्मृतिः अभावितस्मर्तव्या अर्थात् यथार्थस्मृतिः। **'सा च द्वयी- भावितस्मर्तव्या चाभावितस्मर्तव्या च।स्वप्ने भावितस्मर्तव्या , जाग्रत्समये त्वभावितस्मर्त- व्येति'।**१४ स्मृतेः विभागः अन्यत्र न परिलक्ष्यते। यया स्मृत्या योगं प्रति श्रद्धा जायते सा अक्लिष्टस्मृतिः। तद्विपरीतं क्लिष्टस्मृतिः। यतः वृत्तयः क्लिष्टाक्लिष्टभेदेन द्विविधा–**'वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः'।**

मीमांशादर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- मीमांसादर्शने स्मृतिस्वरूपं न परिलक्ष्यते। परन्तु स्मृतेः प्रामाण्यविचारं परिलक्ष्यते। मानमेयोदयकारः प्रमालक्षणं कृतम्-**'प्रमा च अज्ञाततत्त्वार्थज्ञानमेव'**।१५ अर्थात् अज्ञातपदार्थस्य यथार्थज्ञानमेव प्रमा। पूर्वकाले अज्ञातरजते रजतत्त्वरूपेण 'इदं रजतम्' इत्याकारेण ज्ञानमेव प्रमा। अस्य ज्ञानस्य विषयः रजतं पूर्वकाले अज्ञातः आसीत्। अत 'इदं रजतम्'इति रूपेण ज्ञानमेव अज्ञातस्य ज्ञापकम्। रजते स्थितं रजतत्वं अस्मिन् ज्ञाने रजतत्वप्रकारकरूपेण प्रकाशितं भवति। अतः ज्ञानमिदं अज्ञातस्य ज्ञापकं तथा च यथार्थम्। अनेन कारणेन ज्ञानमिदं प्रमा।

'अज्ञातज्ञापक' इति पदसहायेन स्मृतिज्ञाने अतिव्याप्तिं निवारयति। स्मृतिः ज्ञातविषयस्य ज्ञानम्। अर्थात् स्मृतिः अज्ञातस्य ज्ञापका न भवति। अनुभवस्य विषय एव स्मृतेः विषयः भवति। अतः स्मृतिः ज्ञातस्य ज्ञापका न तु अज्ञातस्य ज्ञापका। अतः स्मृतिः न प्रमा। स्मृतेः प्रामाण्यं मम आलोच्यविषयः न ।

वेदान्तदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः -- वेदान्तदर्शने स्मृतिविषये भिन्नोल्लेखः नास्ति। परन्तु प्रमालक्षणस्य व्याख्यानवसरे स्मृतेः व्याख्यानं प्राप्यते। धर्मराजाध्वरीन्द्रेण 'वेदान्तपरिभाषा' ग्रन्थे प्रमायाः लक्षणद्वयं कृतम्। स्मृतिः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता इत्यवलम्व्य प्रमायाः लक्षणम्। स्मृतिः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता न इत्यवलम्व्य प्रमायाः लक्षणम्। तत्र स्मृतिव्यावृत्तं प्रमालक्षणम्-**'प्रमात्वं अनधिगतावाधितार्थविषयकज्ञानत्वम्'**।१६ अर्थात् यत् पूर्वकाले न ज्ञातम् तस्य विषयस्य ज्ञानलाभार्थं यदि वाधा न आगच्छति तर्हि तत् यथार्थज्ञानं प्रमा वा। लक्षणानुसारेण ज्ञातविषयस्य ज्ञानं प्रमा न, ज्ञातविषयस्य ज्ञानं स्मृतिः। यथा पूर्वे घटज्ञानं अभवत्,अद्य घटस्मरणं भवति।अद्य सृष्टघटज्ञानं स्मृतिः।

परन्तु अस्य लक्षणस्य अव्याप्तिस्थलम् अस्ति। यत्र क्रमानुसारेण घटादिज्ञानं भवति तत्र लक्षणं न प्रयुक्तं भवति। यतः द्वितीयादिक्षणे घटज्ञानस्थले पूर्वादिक्षणे प्राप्तस्य घटज्ञानस्य स्मरणं भवति। सिद्धान्तिपक्षे उक्तम्- धारावाहिकज्ञाने विषयस्य परिवर्तनं समयपरिवर्तनेन भवति। अतः सर्वक्षणे अनधिगतविषयस्य ज्ञानं भवति। अतः अत्र अव्याप्तिस्थलं नास्ति।

ये जनाः प्रमायाः अन्तर्भुक्ता स्मृतिः मन्यन्ते तेषां मतानुसारेण प्रमालक्षणम्-**'स्मृति-साधारणन्तु अवाधितार्थविषयकज्ञानत्वम्'**।१७ अर्थात् यस्मिन् विषये ज्ञानलाभे कापि वाधा नास्ति तत् ज्ञानं प्रमा। वाधा अर्थात् प्रतिकुलज्ञानम्। प्रमा-शब्दस्य अर्थः प्रकृष्टज्ञानम्। एषां मतानुसारेण प्रकृष्टज्ञानम् अत्र अवाधितज्ञानम्। अतः स्मृतिः यदि अवाधिता भवेत् तर्हि सा प्रमा। स्मृतिः यदि प्रमा भवति तर्हि तत्पूर्ववर्तिज्ञानं तस्य करणरूपेण स्वीकार्यम्। परन्तु पूर्वाचार्येण विषयोऽयं न स्वीकृतः।

विशिष्टाद्वैतवादिभिः प्रमालक्षणं कृतम्-**'यथावस्थितव्यवहारानुगुणं ज्ञानं प्रमा'**। अर्थात् यथार्थव्यवहारस्य अनुकूलज्ञानं प्रमा। अत्र 'ज्ञानम्' इति पदेन स्मृतिः अनुभवः च इति विषयद्वयम् अभिधीयते। अतः विशिष्टाद्वैतवादिनः स्मृतेः प्रमात्वं मन्यन्ते। परन्तु वेदान्तकौमुदीकारः स्मृतेः प्रमात्वं न स्वीकरोति। तत्त्वचिन्तामणिकारेणापि उक्तम्-**'यत्र यदास्ति तत्र तस्यानुभवः प्रमा'**। अत्र यथार्थानुभवस्य प्रमा स्वीक्रियते। अतः स्मृतेः प्रमात्वम् अत्र न स्वीक्रियते। अनेन प्रकारेण वेदान्तदर्शने स्मृतिविषये व्याख्यातम्।

निष्कर्षः -- भारतीयास्तिकदर्शने स्मृतेः प्राधान्यमस्ति। न्याय-वैशेषिक-योगप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतिस्वरूपं यथार्थरूपेण वर्णितम्। परोक्षरूपेण सांख्य-मीमांसा-वेदान्तप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतिविवरणं प्राप्यते। न्याय-वैशेषिक-योग-अद्वैतवेदान्तप्रभृतिषु दर्शनेषु स्मृतेः प्रमात्वं स्वीकृतम्। परन्तु मीमांसादर्शने स्मृतेः प्रमात्वं न स्वीकृतम्। अनेन ज्ञायते आस्तिकदर्शनसम्प्रदायेषु स्मृतेः अधिकं प्राधान्यमस्ति। योगसूत्रकारेण स्मृतेः गुरुत्वम् अधिकरूपेण प्रदीयते। चित्तस्य वृत्तिरूपेण उपस्थाप्यस्मृतेः प्राधान्यं प्रकाशयति। अस्माकं जीवने अपि स्मृतेः प्राधान्यम् अस्ति। ज्ञातविषयस्य यथार्थसमये स्मरणेन कार्यसिद्धिः भवति। स्मृतिः आवश्यकी परन्तु विस्मृतिरपि आवश्यकी। विस्मृतिसहायेन जनाः पुनः नवरूपेण ज्ञातविषयस्य स्मृतिं कर्तुं शक्यन्ते। अनेन प्रकारेण भारतीयदार्शनिकाः स्मृतेः विवरणं प्रदीयन्ते। परन्तु अत्र स्मृतिसृष्टिविषये समानता अस्ति। स्मृतेः पक्षत्रयं सर्वेषु आस्तिकदर्शनसम्प्रदायेषु स्वीकृतमस्ति। यथा- ज्ञानग्रहणं संरक्षणं पुनरुद्रेकं च। का अपि विद्वत्जनाः उक्तवन्तः-"Memory is when the perceived objects do not slip away and through impressions come back to consciousness". इति॥

तथ्यसूत्रम्-

१. मनुसंहिता - २/१।
२. Psychology by Woodwart।
३. न्यायसूत्रम् ३/२/४।
४. फणीभुषण तर्कवागीश सम्पादित न्यायदर्शन ओ वात्सायनभाष्य.पृ:३६।
५. न्यायसुत्रम् ३/२/४।
६. श्री नारायणचन्द्रगोस्वामी, तर्कसंग्रह, पृ.२६०।
७. नारायणरामाचार्य कृत न्यायवोधिनी,पृ: १७।
८. प्रशस्तपादभाष्य,वुद्धिप्रकरण।
९. सांख्यकारिका,कारिका -४।
१०. नारायणचन्द्रगोस्वामी, सांख्यतत्त्वकौमुदी, पृ: ४०।
११. पातञ्जलयोगदर्शन,समाधिपाद – सुत्रम् ।
१२. पातञ्जलयोगदर्शन,समाधिपाद – सुत्रम् १।
१३. व्यासभाष्यम् ,पातञ्जलयोगदर्शन,समाधिपाद – सुत्रम् १।
१४. व्यासभाष्यम्, पातञ्जलयोगदर्शन,समाधिपाद – सुत्रम् १।
१५. मानमेयोदयो,कारिका-।
१६. शरच्चन्द्रघोषाल,वेदान्तपरिभाषा,पृ:३।
१७. शरच्चन्द्रघोषाल,वेदान्तपरिभाषा,पृ:३।

ग्रन्थपञ्जी-

१) अन्नंभट्टः, *तर्कसंग्रहः*, सम्पा.नारायणचन्द्रगोस्वामी,कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, १४१३ वङ्गाब्दः २००६ आङ्गलाब्दः (तृतीयसंस्करणस्य पुनर्मुद्रणम्)।
२) अमरसिंहः, *अमरकोषः(सटीकानुवादः)*, सम्पा.गुरुदासविद्यानिधिः,कलकाता, संस्कृत- पुस्तकभाण्डारः,१४१७ वङ्गाब्दः २०१० आङ्गलाब्दः।
३) ईश्वरकृष्णः, *सांख्यतत्वकौमुदी(अध्यापनासहिता)*, सम्पा.नारायणचन्द्रगोस्वामी, कलाकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार, १४०६ वङ्गाब्दः, १९९९ आङ्गलाब्दः।
४) तर्कवागीशः, फणिभुषणः, *न्यायपरिचयः*, कलकाता, पश्चिमवङ्गराज्यपुस्तक पर्षद्, २००६(तृतीयमुद्रणम्)।
५) गौतमः, *न्यायदर्शनम्(* प्रथमखण्ड), अनुवादकः व्याख्याता च फणिभुषण- तर्कवागीशः कलकाता, पश्चिमवङ्गराज्यपुस्तक पर्षद्, २०१४(पञ्चमप्रकाशनम्)।
६) गौतमः, *न्यायदर्शणम्(वात्सायन कृत भाष्यसह)*, अनुवादकः व्याख्याता च कालीवरवेदान्तवागीशः, कलकाता, संस्कृत पुस्तक भाण्डार,२०१६ आङ्गलाब्दः।
७) पाणिनिः, *अष्टाध्यायी*, सम्पा.तपनशङ्करभट्टाचार्य्यः, कलकाता, संस्कृत वुक डिपो, २०१२(प्रथमसंस्करणस्य पुनर्मुद्रणम्)।
८) प्रशस्तपादः, *प्रशस्तपादभाष्यम्(द्वितीय भागः)*,सम्पा. ब्रह्मचारी मेधाचैतन्य, कलकाता, संस्कृत वुक डिपो, २०१७, (द्वितीयमुद्रणम्)।
९) सदान्द्रयोगीन्द्रः, *वेदान्तसारः*, सम्पा.लोकनाथचक्रवर्ती,कलकाता, पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षत्, मार्च २०१४ (द्वितीयमुद्रणम्)।
१०) पतञ्जलिः, *पातञ्जलयोगदर्शनम्(योगभाष्यटीकासहिता)*, सम्पा.श्रीमद् हरिहरानन्दआरण्य, कलकाता पश्चिमवङ्गराज्य पुस्तक पर्षत्, डिसेम्वर २०१५(सप्तमसंस्करणम्)।
११) भट्टाचार्यः समरेन्द्रः, *भारतीयदर्शनम्*, कलकाता, वुक सिण्डिकेट प्राइभेट लिमिटेड, २०१०(पुनर्मुद्रणम्)।
१२) धर्मराजाध्वरीन्द्रः, *वेदान्तपरिभाषा*, सम्पा.करुणासिन्धुदासः,कलकाता,संस्कृत पुस्तक भाण्डार,२०१५(पुनर्मुद्रणम्)।

नाडुगोपालदासः,शोधकर्ता,विद्यासागरविश्वविद्यालयः।